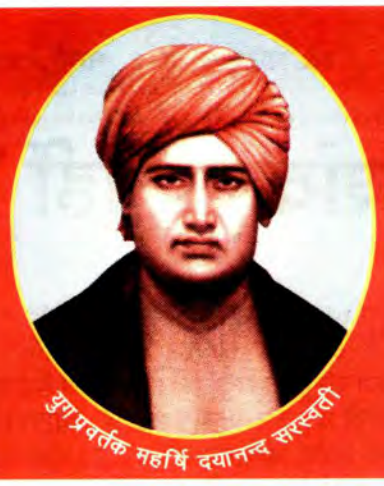

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 11 अंक 45 | 25 फरवरी से 3 मार्च, 2016 | दयानन्दाब्द 192 | सृष्टि सम्वत् 1960853116 | सम्वत् 2072 | फा. कृ. 03

देश के विभिन्न भागों से पधारे सैकड़ों आर्यजनों की उपस्थिति में

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 49वाँ वार्षिक महोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली वर्तमान में सर्वाधिक प्रासांगिक है

– स्वामी आर्यवेश

स्वामी धर्मानन्द जी एक कर्मठ व तपोनिष्ठ संन्यासी हैं

– स्वामी प्रणवानन्द

आर्ष शिक्षा के लिए हम सदैव अपना सहयोग देते रहेंगे

– वीरसेन सिन्धु

उड़ीसा में आर्यों के तीर्थ स्थल गुरुकुल आश्रम आमसेना का 49वाँ वार्षिक महोत्सव अपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। महोत्सव के अवसर पर आशा के विपरीत आर्यजनों की उपस्थिति ने सभी गुरुकुल वासियों को उत्साह से भर दिया।

इस अवसर पर प्रतिवर्ष की तरह हरियाणा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक चौ. शीशराम जी की पुण्य स्मृति में 1 फरवरी से ऋग्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ पं. विशिकेशन शास्त्री के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ तथा 8 फरवरी को 11 बजे अनेक श्रद्धालु आर्य सज्जनों की उपस्थिति में प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी–प्रधान सार्वदेशिक सभा, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी तथा पचासों वानप्रस्थियों एवं आर्य सज्जनों द्वारा यज्ञ में आहुति देने तथा गुरुकुल आश्रम आमसेना के संचालक श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के प्रेरणाप्रद सम्बोधन के साथ सम्पन्न हो गया।

इस अवसर पर गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य प्रसिद्ध चिकित्सक त्यागी, तपस्वी स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती ने महोत्सव में आये आर्य संन्यासियों एवं वानप्रस्थियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि वैदिक धर्म की रक्षा एवं प्रचार–प्रासार के लिए अपने जीवन आहूत करते हुए ये विशिष्ट व्यक्ति समाज की अहर्निश सेवा कर रहे हैं। इन जैसे व्यक्तियों के कारण ही समाज सर्वांगीण उन्नति के पथ पर अग्रसर होता है। इस अवसर पर पधारे खल्लरी के विधायक श्री चुन्नीलाल साहू जी ने भी सभी महात्माओं को माला और कम्बल प्रदान कर तथा डॉ. पूर्ण सिंह जी डबास ने स्मृति चिन्ह

आदि देकर सम्मानित किया। महोत्सव का शुभारम्भ श्री डॉ. पूर्ण सिंह जी डबास एवं श्रीमती शशि सिन्धु एवं डॉ. कुंजदेव जी आदि के करकमलों से ध्वजारोहण द्वारा किया गया तथा नवापारा के पूर्व विधायक श्री राजूभाई ढोलकिया, स्वामी व्रतानन्द जी, श्री पूर्ण सिंह जी डबास आदि के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं कन्याओं के द्वारा मंत्र पाठ के साथ शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर बिहार के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यप्रकाश तथा मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) से पधारे श्री सतीश सुमन एवं ढोलकवादक, सुभाष राही ने अपने भजनों से सभी लोगों का उत्साहवर्धन किया। इस शुभावसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी, परममित्र मानव निर्माण संस्थान के प्रमुख अधिकारी चौ. मित्रसेन जी आर्य के द्वितीय सुपुत्र श्री वीरसेन जी सिन्धु अपने अनेक साथियों के साथ पधारे। इनके आगमन पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं कन्धमाल जिले के नर्तक दल ने भव्य स्वागत किया। इन सभी के आगमन से महोत्सव में पधारे आर्यों का उत्साह दुगुना हो गया। मध्यान्ह के पीछे दो बजे से खरियार रोड नगर में शोभा यात्रा निकाली गई यह शोभा यात्रा लगभग 1 किमी. लम्बी थी। इस शोभा यात्रा में भाग लेने वाले सभी महात्माओं का स्थान–स्थान पर भव्य स्वागत किया गया तथा शोभायात्रा में चलने वाले ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों एवं आर्य सज्जनों का मिष्ठान, पानी आदि देकर नगर वासियों ने अपनी श्रद्धा प्रकट की।

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

शिवभक्त चेतें! क्या शिवरात्रि का शिव शंकर नहीं?

– आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा

यह ब्रह्माण्ड बड़ा विशाल है। इस विशाल ब्रह्माण्ड का शासक, प्रशासक, प्रकाशक, रक्षक, धारक, पालक, अविनाशक, संहारक आदि गुण, कर्म, स्वभाव वाला शिव=कल्याणकारक ब्रह्म, ओ३म् ईश्वर है। यह ब्रह्माण्ड का स्वामी, सर्व मंगलकारक, सुखदायक ईश्वर हस्तपाद, शिर, नयन, कर्ण, नासिका, मुख आदि आकारों वाला एवं पिण्डरूप नहीं है। वह तो ओ३म् पदवाच्य सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, निराकार, अजर, अमर, चेतन शिव सुखदायक, शंकर=सुखकारक आदि स्वरूपमय है। यह वेद एवं वेदानुकूल शास्त्रों से सुप्रमाणित है। वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस स्वरूप को ही ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त ऋषियों ने जाना और माना है। आर्य समाज के संस्थापक वेदभाष्यकार महर्षि दयानन्द ने भी ब्रह्मादि ऋषियों का ही अनुगमन किया हैं

पर वेदादि शास्त्रों द्वारा सुप्रमाणित ईश्वर के इस सर्वव्यापक, शंकर=सुखकारक आदि स्वरूपों से बहुत से मतवादी सहमत नहीं है। उन असहमत मतवादियों में एक ब्रह्माकुमारी मत भी है। ब्रह्माकुमारी मत ईश्वर को सर्वव्यापी नहीं मानता, शंकर ईश्वर का ही विशेषण या नाम है, यह भी नहीं मानता। इस मत की बड़ी विचित्र धोखा देने वाली अवधारणाएँ हैं। मेरे समक्ष इस मत की शिव और शिवरात्रि, घोरकलहयुग विनाश पुस्तक एवं ओम शान्ति मीडिया समाचार पत्र सामने रखे हैं। जिनमें इनकी शिव ईश्वर सम्बन्धी अवधारणाएँ लिखी हुई हैं। यह मत वेदोक्त संस्कृति व धर्म का नाशक एवं तथाकथित हिन्दू धर्म की नींव खोदने वाला मत है। घोरकलहयुग विनाश पुस्तक के 12वें पृष्ठ पर हिन्दू मतावलम्बियों को बुतपरस्त हिन्दू ऐसा सम्बोधन कर उन्हें धिक्कारा है। इस मत के आदि आरम्भक सिन्ध, करांचीवासी लेखराज हैं। जिन्हें ब्रह्माकुमारी मत शिव का अवतार मानता है। लेखराज के अनुयायी रामायण को श्रीराम का जीवन चरित्र एवं गीता को कृष्ण का उपदेश नहीं मानते, अपितु रामायण को उपन्यास एवं गीता को लेखराज का उपदेश मानते हैं। इनके अनुसार शिव यहूदियों का यहोवा है एवं मुहम्मद का अल्लाह शिव है। शिव और शिवरात्रि पुस्तक के 39वें पृष्ठ पर पंक्ति है – परमात्मा के शिव नाम का ही एक रूपान्तर यहोवा है और वह सर्वव्यापक नहीं है। इसी प्रकार पृ. 42 पर पंक्ति है – मुहम्मद साहब ने शिव को ही अल्लाह नाम दिया था, हाँ! वे मूर्तिपूजा के विरुद्ध थे। इन पंक्तियों से सुस्पष्ट है कि यह ब्रह्माकुमारी मत ईसाई, मुसलमानों का छद्मवेशी मत है।

ईश्वर को सर्वव्यापक मानने पर इन्हें जो बाधा लगती है, वह शिव और शिवरात्रि एवं ओम शांति मीडिया के अनुसार यह है कि यदि कल्याणकारी शिव ईश्वर को सर्वव्यापक मानेंगे, तो सर्वव्यापक तत्व का कहीं आना–जाना नहीं हो सकता, अतः उसे मन के समान तीव्र गति वाला भी नहीं कहा जा सकता। शिव को शंकर न मानने में इनका कथन है – शिव देवों के देव हैं और शंकर पुरी के निवासी एक देवता की मूर्ति है, शंकर शिव का पर्याय शब्द नहीं है। इस प्रकार लेखराज द्वारा चलाये गये इस मत की अनेक वेद एवं भारतीय संस्कृति के विरुद्ध मान्यताएँ हैं।

इस ब्रह्माकुमारी मत को ज्ञात हो कि ईश्वर के स्वरूप, कार्य आदि के ज्ञान में वेद एवं वेदानुकूल शास्त्र ही प्रमाणभूत हैं, अज्ञानी नहीं। अज्ञानी मतवादियों के कथन न प्रमाण योग्य होते हैं, न मानने योग्य। वेदादि शास्त्रों में ईश्वर की सर्वव्यापकता के प्रतिपादक अनेकों मण्डल, काण्ड, अध्याय, अनुवाक, सूक्त, मन्त्र, मन्त्रचरण, वाक्य, वचन निर्दिष्ट हैं। उदाहरणरूपेण अथर्व मन्त्र है –

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वन्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश।
य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये।।

अथर्व. 7/91/1।।

अर्थात् यः = जो, रुद्रः = रुद्ररूप कर्मानुसार फल द्वारा रुलाने वाला ईश्वर, अग्नौ = अग्नि में, यः=जो, अप्सु अन्तः= जलों के मध्य, यः= जो, वीरुधः= विविध शाखा एवं पत्र वाली, औषधीः=धान, गेहूँ, कदली आदि औषधियों में, आविवेश= प्रविष्ट है, यः= जिस ईश्वर ने, इमा विश्वा= इन सब, भुवनानि= लोकों को, चाक्लृपे= बनाया है, तस्मै=उस, अग्नये रुद्राय= अग्रणी, प्रेरक रुद्र ईश्वर के लिए, नमः अस्तु= स्तुतियाँ है, प्रार्थनायें हैं।

मन्त्र का भाव है, रुद्र ईश्वर जगत् के अग्नि, जल, औषधि=धन धान्य, वृक्ष आदि पदार्थों में, लोक लोकान्तरों में व्याप्त है, सबसे अग्रगामी है। वह ही सबका उपास्य एवं प्रार्थ्य है।

ईश्वर की सर्वव्यापकता का निर्देशक यजुः मन्त्र है –

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।
तस्मिन्निद ँ्सं च वि चैति सर्व ँ्स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु।। यजु. 32/8।।

अर्थात् जो गुहा निहितम्=बुद्धि में स्थित है, यत्र=जिस ईश्वर में, विश्वम्=सम्पूर्ण जगत्, एकनीडम्=एक आश्रय वाला है, तत्=उस, सत्=चेतन सत्ता को, वेनः=ज्ञानी, पश्यत्=ज्ञानचक्षु से देखता है, तस्मिन्= उसी ब्रह्म ईश्वर में, इदम् सर्वम्= यह सब जगत्, सम् एति= प्रलय में संगत होता है, च=और उत्पत्तिकाल में पृथक, स्थूल रूप में विस्तृत, च=भी होता है, सः=वह ब्रह्म ईश्वर, विभूः= व्यापक है, प्रजासु= समस्त जड़, चेतन में, ओतः च प्रोतः= वस्त्र के खड़े आड़े सूतों की भांति ओत है और प्रोत है।

तात्पर्य स्पष्ट है कि परमात्मा, ब्रह्म, ईश्वर जगत् के जड़, चेतन पदार्थों में व्यापक है, वस्त्र के सूत के सदृश सर्वत्र ओत–प्रोत है। उसके ओत–प्रोत होने से सम्पूर्ण जगत् एक नीड है, एक आश्रय वाला है।

वेदों की सार उपनिषदों में ईश्वर की व्यापकता के अनेक स्रोत विद्यमान है। श्वेताश्वेतर उपनिषद् में ईश्वर को सर्वव्यापी नाम से निर्दिष्ट कर परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान को परमब्रह्म उपनिषद् कहा है। वचन है –

सर्वव्यापिनमात्मानं क्षीरे सर्पिरिवार्पितम्।
आत्मविद्यातपोमूलं तद्ब्रह्मोपनिषत्परं तद्ब्रह्मोपनिषत्परमिति।।

श्वेता. उप. 1/16।।

अर्थात् क्षीरेः=दूध में, सर्पिः इव=घृत के सदृश, अर्पितम्=व्याप्त, सर्वव्यापिनम्=चराचर में व्याप्त, आत्मानम्=ब्रह्म, ईश्वर का आत्मविद्या=आत्मज्ञान द्वारा, तपः= तप द्वारा, मूलम्= मूल स्वरूप ज्ञात होता है अथवा परमात्मा का ज्ञान आत्मविद्या एवं तप, मूलम्= आधार वाला है। तत्= उस, ब्रह्म उपनिषद्= ब्रह्म का ज्ञान, उपासना ही, परम्=श्रेष्ठ है, अन्तिम स्थिति है, तद् ब्रह्म उपनिषद् परम्= वह ही परम ब्रह्म ज्ञान है।

वचन का तात्पर्य है सर्वव्यापी ब्रह्म दूध में घृत की भांति सर्वत्र समाया हुआ है। उसकी प्राप्ति का मूल आधार आत्मविद्या एवं तप है। वह ब्रह्म ईश्वर उपनिषद् का परम रहस्य स्वरूप ज्ञान है।

मुण्डकोपनिषद् में ईश्वर को सर्वव्यापक निर्दिष्ट करते हुए कहा –

नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः।। मुण्ड. उप. 1/6।।

अर्थात् नित्यम् = सनातन, अजर, अमर, विभुम् = व्यापक, सर्वगतम् = सर्वत्र पहुंचा हुआ, सुसूक्ष्म् = सूक्ष्मातिसूक्ष्म, तत् = वह ब्रह्म, अव्ययम् = अविनाशी, यद् भूतयोनिम् = जो चराचर भूतों का निमित्त कारण व आश्रय है, उसे, धीराः = ज्ञानी, ध्यानी, परि पश्यन्ति = देखते हैं, उसका साक्षात्कार करते हैं।

वचन का भाव है, ब्रह्म नित्य, व्यापक सब पदार्थों को प्राप्त, सूक्ष्म, अविनाशी है। उसमें ही सब भूत = उत्पन्न होने वाले पदार्थ रहते हैं। परा विद्या वाले ज्ञानी उसका साक्षात्कार करने में समर्थ होते हैं।

शिवपुराण आदि अन्य ग्रन्थों में भी ईश्वर को सर्वव्यापक बताया है। उदाहरणरूप वेद एवं उपनिषद् के इन प्रमाणों से सुस्पष्ट है कि परमपिता परमात्मा ईश्वर सर्वव्यापक है। उसके सर्वव्यापक होने पर ईश्वर को कहीं आने जाने की आवश्यकता नहीं, वह तो सर्वव्यापक होने से स्वतः ही सर्वगत है, सर्वत्र ही पहुँचा हुआ है। वह मन के समान क्या? मन से भी तीव्र गति वाला है। ईश्वर की मन से भी शीघ्र गति का निर्देश करते हुए वेद में कहा है –

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवाऽआप्नुवन्पूर्वमर्षत्।

यजु. 40/4।

अर्थात् एकम् = अद्वितीय ईश्वर, अनेजत् = गति नहीं करता, वह अचल है, परन्तु मनसः = मन के वेग से भी, जवीयः = अति वेगवान् है। और वह, पूर्वम् अर्षत् = पहले से ही सबसे आगे जहाँ कोई चलकर जाए, वहाँ व्याप्त हुआ होता है। देवाः = चक्षु: आदि इन्द्रियों, एनत् = इस देव ईश्वर को, न आप्नुवन् = प्राप्त नहीं करती।

तात्पर्य हुआ, ईश्वर सर्वव्यापक है, मन की गति से भी तीव्र गति वाला है, अचल है, अवतार एवं आने–जाने की विधियों से रहित है। सम्पूर्ण जगत् में ठसाठस भरा है। उससे जगत् के तीनों लोकों का कण–कण व्याप्त है। व्याप्त होकर के सृष्टि का पालन, धारण, उत्पादन कर रहा है। सुख समृद्धि के साधनों को दे रहा है। ईश्वर यदि सर्वव्यापक न होता, तो वह सृष्टि के समस्त पदार्थों का अधिष्ठाता, आधार, क्रिया कर्म का साक्षी कैसे होता। एवं कर्मफल का दाता और न्यायकारी कैसे बनता। सुखों के साधनों को किस प्रकार देता। अतः सिद्ध है वह सर्वव्यापक है।

इस विशाल सृष्टि की जितनी भी धन धान्य, सोना, चाँदी, समृद्धि सम्पत्ति आदि की सम्पदायें हैं, उनका आधार निराकार, सर्वव्यापक शिव = सुख का कारण, शंकर = सुखकारक ब्रह्म ईश्वर ही तो है। सम्पदा का क्षेत्र भी छोटा नहीं है, अति विस्तृत है। पृथिवी को देखते ही सरस, नीरस, नाना प्रकारक, अनुमानित सम्पदा का आगार दिखता है, अन्तरिक्ष पर दृष्टि डालते ही वायु, विद्युत एवं उत्पत्ति के आधार जल आदि का बृहत् भण्डार दृष्टिगोचर होता है, द्यौलोक में दृष्टि पड़ते ही प्रकाश, दीप्ति के हेतु जाज्वल्यमान चाँद, सितारे, सूर्य, चन्द्र आदि बड़े–बड़े प्रकाशपुंज दीख पड़ते हैं।

सर्वव्यापक ईश्वर प्रदत्त इस सम्पदा से पहाड़ों को चीरकर लोग पति, धनपति बन रहे हैं, वृक्षों को कांट बेचकर नगरपति हो रहे हैं, जलों को बेचकर बड़े लखपति स्वामी कहे जा रहे हैं, फलों का लेन–देन कर कोठीपति सिद्ध हो रहे हैं, लोहा, कोयला आदि को प्राप्त कर करोड़ पति बन रहे हैं, तेलों की खदानों से अरबपति, खरबपति बनते जा रहे हैं। यह सब निराकार शिव, शंकर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, अजर, अमर, ईश्वर की सम्पदा का ही कमाल है।

सर्वव्यापक शिव ईश्वर द्वारा दी गई सम्पूर्ण सम्पदा सर्वजनीन है, सबके लिए है। किसी एक व्यक्ति, क्षेत्र, ग्राम, प्रान्त, प्रदेश, देश के लिए ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के लिए यह सम्पदा है।

सम्पदाओं के स्वामी ओमभिधान शिव, शंकर ईश्वर की इस गरिमा, महिमा, उदारता, दयालुता को देख भक्ति भावों से नित्य सभी का मस्तक नम है। उन भक्ति भावों को व्यक्त करते हुए कोई भी थकता नहीं। उन भक्ति भावों का सूचक मन्त्र है :–

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

यजु. 16/41।।

यजुर्वेद के इस मन्त्र में 3 बार नमः शब्द आया है। नमः शब्द 2 प्रकार के हैं। जो णम प्रह्नत्वे शब्दे च धातु से असुन् एवं अच् प्रत्ययों द्वारा हलन्त, अजन्त क्रमशः नमस्, नमः शब्द रूप सिद्ध होते हैं। जिनके नमस्कार, सत्कार, (नमस्यति परिचरणकर्मा, निघ. 3/5) वज्र, अन्न (नमः इति अन्न नाम, निघ. 2/7, नमः इति वज्र नाम, निघ. 2/20), संगति, स्तुति (यज्ञो वै नमः, शत. ब्रा. 2/4/2/24) आदि अर्थ हैं। जिनका प्रकरणानुसार सम्बन्ध होता है। यहाँ प्रकृत मन्त्र में प्रसंगतः नमः शब्द के स्तुति अर्थ की संगति होगी।

इस यजुः मन्त्र में स्तुति के अधिकारी ईश्वर के लिए चतुर्थी विभक्त्यन्त शम्भवाय, मयोभवाय, शंकराय, मयस्कराय, शिवाय, शिवतराय ये 6 पद आये हैं। इन 6 पदों के माध्यम से उपासक द्वारा सुख, कल्याण के निमित्त उपास्य ईश्वर के प्रति हृदय के गम्भीर भाव अभिव्यक्त हैं।

मन्त्र में आये ये चतुर्थ्यन्त पद शम्, मयस्, शिव इन शब्दों से निष्पन्न हुए हैं। ये तीनों शब्द शम् इति सुख नाम, निघ. 3/6, मयः इति सुख नाम, निघ. 3/6, शिवम् इति सुख नाम, निघ. 3/6, सुख के वाचक हैं। आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक इन 3 भेदों से सुख भी 3 प्रकार का है। शम् शब्द वाच्य सुख आध्यात्मिक = मोक्ष का सुख है, मयस् शब्द वाच्य सुख आधिदैविक = देव, इन्द्रिय अर्थात् मन, प्राण, 10 इन्द्रियों एवं आत्मा का सुख है। शिव शब्द वाच्य सुख आधिभौतिक = सांसारिक, धन–धान्य, रुपया पैसा, सगे सम्बन्धी आदि का सुख है।

शम् तथा मयस् उपपद रहते अन्तर्भावितण्यर्थ में भू सत्तायाम् धातु से अच् प्रत्यय द्वारा शम्भव, मयोभव शब्द सिद्ध होते हैं। जिनका चतुर्थी में शम्भवाय, मयोभवाय रूप बनता है। जिनका अर्थ होता है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख उत्पन्न न करने वाले के लिए।

शम् तथा मयस् उपपद रहते डुकृञ्करणे धातु से अच्

शेष पृष्ठ 6 पर

शिवत्व की प्राप्ति

– वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

मनुष्य के तीन स्वरूप हैं – रौद्र, शिव तथा पशु। पशुत्व मानव का स्वाभाविक एवं जन्मजात गुण है। पश्यति स्वार्थमिति पशुः। आहार करना, डरना, डराना, लड़ाई, क्रोध आदि पशु के जन्मजात स्वाभाविक गुण हैं। मनुष्य में इनके अतिरिक्त ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार आदि भी जन्म से ही रहते हैं ये उसके रौद्र रूप से सम्बन्धित हैं किन्तु ये भी वास्तव में पशुत्व ही हैं। एक छोटा बच्चा बिना सिखाए भी इन गुणों से स्वभाव से ही संयुक्त रहता है। इन्हें छोड़कर शिवत्व की प्राप्ति ही मानव का लक्ष्य है। प्रत्येक मनुष्य में उसका एक रौद्र रूप भी छिपा है तथा वह है तेजस्विता ऊर्ध्वगमन की प्रवृत्ति। शतपथ ब्राह्मण 5/3/1/10 में 'अग्निर्वैरुद्रो कहा गया है। मानव में यह आग्नेयतत्व ही उसका रूद्र रूप है। संयमित होकर यही मानव को उन्नतिशील एवं ऊर्ध्वगामी बना देता है तथा विकृत होकर यही क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष आदि को जन्म देकर उसे नरकगामी बना देता है। शिवत्व तथा रूद्रत्व व्यक्ति में दोनों साथ–साथ रहते हैं, किन्तु पशुत्व अकेला ही रहेगा। पशुत्व के प्रबल होने से व्यक्ति के शिवत्व तथा रूद्रत्व दब जायेंगे। हमें पशुत्व से ऊपर उठकर शिवत्व को प्राप्त करना है, शिवरात्रि इसीलिए है। इसीलिए इस पर्व पर शिव की आराधना की जाती है।

लोक में शिव तथा रूद्र को प्रायः एक ही माना जाता है, किन्तु दोनों अलग–अलग देव हैं। ये दोनों नाम परमेश्वर के भी हैं। वह शिव स्वरूप में जगत का पालन कर रहा है तथा रूद्र रूप में दुष्टों, दुष्कर्माओं को दण्ड भी दे रहा है। बालक मूलशंकर ने मंदिर में शिव पिण्डी के पास इसी शिव परमेश्वर की प्राप्ति के लिए रात्रि जागरण किया था, किन्तु यहाँ उसकी मनोकामना पूरी नहीं हो सकी, क्योंकि यह वास्तविक शिव था ही नहीं। मूलशंकर बालक तो था, किन्तु उच्चकोटि का जिज्ञासु एवं पूर्वजन्म का संस्कारी बालक था, तभी तो उसके मन में शिवलिंग पूजा से विरक्ति तथा सच्चे शिव की प्राप्ति की अभिलाषा जगी, अन्यथा मूलशंकर से पहले भी मन्दिरों में शिव पूजा होती चली आ रही है, किन्तु अन्य किसी के मन में इस प्रकार की जिज्ञासा नहीं उठी, न ही अब उठती है। अब लोक प्रचलित शिव के स्वरूप पर भी विचार करते हैं।

शिव लोक मंगल के देव हैं। आशुतोष तुरन्त प्रसन्न हो जाने वाले हैं। परमेश्वर का भक्त सदा प्रसन्न ही रहता है। वह कभी दुःखी होता ही नहीं। शास्त्रों में इसे ही 'प्रसाद' नाम से कहा गया है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं :–

प्रसादे सर्वदुःखाना हातिरस्योपजायते।। गीता।।

अर्थात् इस प्रसाद गुण को प्राप्त कर लेने पर सभी दुःख नष्ट हो जाते हैं। योग दर्शन के कास भाष्य में इसे 'प्रज्ञा प्रसाद' कहा गया है। शिव का वाहन नन्दी है। यह नन्दी बैल का वाचक नहीं है जैसा कि शिव जी को बैल पर बैठा हुआ दिखलाया जाता है। यह परमेश्वर भक्त की आनन्द स्वरूपता है जिस पर वह हर समय आरूढ़ रहता है। इसे ही उपनिषदों में इस प्रकार कहा गया है :–

रसो वै सः। रसं हि लटध्वाऽहुनडी भवति।

अर्थात् परमेश्वर रस रूप है। रस यहाँ आनन्द का ही वाचक है। परमेश्वर आनन्द स्वरूप है। उसकी भक्ति से उपासक भी आनन्दी आनन्दयुक्त हो जाता है, आनन्द वाला हो जाता है, यह भाव है। लोक में आनन्दी का 'आ' हटा कर इसे ही नन्दी बैल बना दिया गया। शिव का बैल से कोई सम्बन्ध नहीं है।

शिवत्व प्राप्ति के पश्चात् व्यक्ति की दृष्टि संसार पर नहीं रहती। तब वह बाहर नहीं, अपितु अपने अन्दर, अपने अन्तरात्मा तथा उसमें निहित परमात्मा को देखता है। महाकवि कालिदास ने कुमार सम्भव नामक महाकाव्य में शिव जी की इस अवस्था का वर्णन इस प्रकार किया है :–

मनो नवद्वारनिरुद्ध हन्ति हृदि संस्थाय समाधिवश्यम्।

यमसरं वेद विदो विदन्ति तआत्मन्या त्मानमव लोकयत्तम।।

अर्थात् शिव जी अपने मन को नौ इन्द्रियों के व्यापार से हटाकर तथा समाधि के द्वारा हृदय में एकाग्र करके वेद प्रतिपादित परमेश्वर को अपने आत्मा में देख रहे थे, साक्षात् कर रहे थे। शिवत्व की प्राप्ति के लिए तपस्या अनिवार्य है। महर्षि दयानन्द ने भी इसके लिए घनघोर तपस्या की थी।

महर्षि दयानन्द शिव की खोज में घर से निकले। उन्होंने सच्चे शिव के दर्शन तो किये ही, वे स्वयं भी शिव स्वरूप हो गये। लोग मंगल में लग गये। महर्षि दयानन्द से किसी ने पूछा कि क्या कभी आपके मन में काम, विकार नहीं आया। महर्षि का उत्तर था कि कभी ऐसा अवकाश ही नहीं मिला कि मन उधर जाए। मैं विभिन्न कार्यों में ही इतना व्यस्त हूँ। कितना चौंकाने वाला उत्तर है यह। दयानन्द भी बचपन में मूल शंकर थे तथा शिवजी को भी शंकर कहते हैं। किन्तु इस प्रकार तो यह मूल शंकर आदि शंकर से भी आगे बढ़ गया जिसे एक बार तो पार्वती ने थोड़ा सा हिला ही दिया था। भले ही बाद में उन्होंने काम दहन कर दिया। दयानन्द को इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी। शिवजी के पास त्रिशूल है जो दुष्टों का घातक है। शिवत्व मार्ग का पथिक भी ज्ञान, कर्म, उपासना नामक त्रिशूल से अपने सभी विकारों को शान्त कर देता है। शिवत्व की प्राप्ति केवल योग साधना से ही नहीं होती इसके लिए कर्म भी आवश्यक है। महर्षि दयानन्द, श्री कृष्ण आदि योगी जन आजीवन सतत कर्मशील बने रहे। शिवजी के पास उनकी पत्नी उमा विद्यमान है। वह उनकी सतत सह–चारिणी है। शिवत्व के इच्छुक को भी अपने पास सर्वदा उमा को रखना होगा। यह वह उमा है जिसका केनोपनिषद में हेमवती उमा नाम से वर्णन किया गया है। इसके माध्यम से ही देवों ने यक्ष अर्थात् परमेश्वर को जाना। ध्यानी योगी को ऋतम्भरा प्रज्ञा की प्राप्ति होती है, ऐसा पतंजलि मुनि ने योग दर्शन में कहा है। यही है योगी की उमा जो उसे शिवत्व की प्राप्ति तथा ब्रह्मदर्शन कराती है।

शिव तथा रूद्र कहा जा चुका है कि सामान्य व्यक्ति तथा योगी में भी शिवत्व तथा रूद्रत्व दोनों गुण रहते हैं। सांसारिक व्यक्ति का शिवत्व दबा रहता है, जबकि योगी में शिवत्व का आधिक्य रहता है। वेद में शिव तथा रूद्रः– दोनों देव अलग–अलग है। शिवजी के पास त्रिशूल है तो रूद्र के पास धनुष। शिव जी का वाहन नन्दी है तो रूद्र का वाहन आरवु है। आरवु चूहे को भी कहते हैं। सम्भवतः लोक में इसी कारण चूहे को शिव जी के पुत्र गणेश जी की सवारी बना डाला। कहीं भी इसका उल्लेख नहीं है। शतपथ ब्राह्मण में अग्नि को ही रूद्र कहा गया है। आरवु इसी अग्नि का वाहन है। आ समन्तात् खनतीति आरवुः। यज्ञाग्नि चारो ओर रोग के कीटाणुओं को नष्ट कर देती है। यह आरवु रोगनाशक शक्ति ही अग्नि=रूद्र का वाहन है।

– बी–266, सरस्वती विहार,
दिल्ली,
मो.:–9868144317

दो आंसू

- कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर

जिन्हें संसार में संसार का उपकार करना था
जिन्हें दुनिया में वैदिक धर्म का विस्तार करना था
अनाथों और अछूतों का जिन्हें उद्धार करना था।
जिन्हें निज देश और जाति का बेड़ा पार करना था
उन्हें देखो कि बाहम बरसरे पैकार बैठे हैं
समाजों को मिटाने के लिए तैयार बैठे हैं।

जमाना रश्क करता था कभी वो प्यार था हममें
हर इक इक दूसरे का मूनिसो गमख्वार था हममें
धर्म पर जान देने को हर इक तैयार था हममें
बला का जोश था और जज्बये ईसार था हममें
मगर अब आर्यों में नाम को उल्फत नहीं मिलती
न वो श्रद्धा, न वो भक्ति है वो हिम्मत नहीं मिलती।

निकलते थे जो हम शानों पै वेदों के अलम रखकर
फरिश्ते भी फिदा होते थे उस पुरजोर मंजर पर
जला देते थे हम दुश्मन के खिरमन को कलम रखकर
हटाते ही न थे पीछे कभी आगे कदम रखकर
नमस्ते लब पै आते ही मुखालिफ चौंक पड़ते थे
'समाजी' नाम से पाखंडियों के होश उड़ते थे।

समाजों की मगर अब रात–दिन तहकीर होती है
रवां गर्दन पै रोज अगयार की शमशीर होती है
न वो तहरीर होती है, न वो तकदीर होती है
जो होती है तो हर इक बात बे–तासीर होती है
न वो लेखक रहे हममें, न वो तक्कार हैं बाकी
कि इस गुलशन के गुल मुरझा गए अब खार हैं बाकी।

ऋषि किस्मत से फिर इक बार यदि भारत में आ जाएं
रुखे अनवर 'मुसाफिर' आके फिर इक बार दिखलाएं
हमारे दम्भ को देखें और इस आचार पर जाएं
तो सच कहता हूँ गैरत से बिना ही मौत पर जाएं
पदों की लालसा में रोज लड़ते और लड़ाते हैं
अदायें शासकों की हैं मगर सेवक कहाते हैं।

उठो अब आर्य वीरों फिर से अपना संगठन करके
समाजों को बचाओ फूट से कोई जतन करके
मिटा दो ढोंग और पाखण्ड को भगवद् भजन करके
बजाओ वेद का डंका फिदा जान और तन करके
तुम्हें जेबा नहीं हरगिज भी इस हालत से घबराना
जो तुम चाहो तो कुछ मुश्किल नहीं बिगड़ी का बन जाना।

पृष्ठ–1 का शेष

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 49वाँ वार्षिक महोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न

सायंकाल 6 से 9 बजे तक दोनों दिन गुरुकुल सम्मेलन में स्वामी धर्मानन्द जी द्वारा संचालित कई गुरुकुलों की कन्याओं एवं ब्रह्मचारियों ने भाषण, गीत, नाटक आदि द्वारा जनता का मन मोह लिया तथा अनेक आर्यजनों से पुरस्कार प्राप्त किये। 7 फरवरी को पूर्ववत् महायज्ञ के पीछे अभिनन्दन समारोह में पहले सभी महात्माओं, विद्वानों का सम्मान श्री वीरसेन जी सिन्धु ने किया। फिर आर्ष कन्या गुरुकुल बिजनौर की आचार्या डॉ. प्रियम्वदा वेद भारती एवं गुरुकुल कण्वाश्रम गढ़वाल के आचार्य ब्र. विश्वपाल जयन्त का अभिनन्दन शॉल, श्रीफल अभिनन्दन पत्र एवं 21–21 हजार रुपये की राशि से किया गया। इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी का गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर प्रेरणाप्रद उपदेश हुआ।

सभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने अपने ओजस्वी तथा धाराप्रवाह उद्बोधन में वर्तमान परिवेश में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता का उल्लेख करते हुए उसकी वर्तमान शिक्षा प्रणाली से तुलना की। उन्होंने कहा कि वर्तमान में चल रहे दूषित तथा विषाक्त वातावरण में बच्चों को शिक्षित तथा संस्कारित करना अत्यन्त दुष्कर कार्य हो गया है। क्योंकि स्कूल में मात्र कुछ घण्टे की पढ़ाई होती है, और स्कूल से लौटने के पश्चात् बच्चों को गली, मोहल्ले तथा मित्रों से जो वातावरण मिलता है उसके फलस्वरूप वे बचपन से ही कुसंग तथा कुसंस्कारों के शिकार हो जाते हैं और बड़े होते–होते वे पूरी तरह दिग्भ्रमित हो जाते हैं। स्वामी जी ने कहा कि आज उन्हें साहित्य के रूप में गन्दे उपन्यास, अश्लीलता से भरी पत्रिकाएँ तथा टी.वी. के पर्दे पर फूहड़ विज्ञापन नग्नता, अश्लीलता, अपहरण, बलात्कार, चोरी, डकैती, हत्या तथा हिंसा से ओत–प्रोत फिल्में तथा दृष्य उन्हें नैतिकता, देशभक्ति, मातृ–पितृ भक्ति, गुरुभक्ति एवं सुचरित्र से कोसों दूर ले जाकर खड़ा कर देती हैं। ऐसी विशाक्त आंधी के बीच वर्तमान शिक्षा प्रणाली युवाओं को चरित्र निर्माण एवं संस्कार देने में पूरी तरह नाकारा सिद्ध हो रही है। युवाओं के पतित होने के पीछे यह सबसे बड़ा कारण है। स्वामी जी ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में बच्चे का निर्माण चौबीसों घण्टें सुयोग्य विद्वान, आचार्यों तथा व्यवस्थापकों की देख–रेख तथा अनुशासित ढंग से होता है। उन्हें कोई अतिरिक्त समय गलत दिशा में जाने व सोचने के लिए नहीं मिलता। अतः ऐसी शिक्षा प्रणाली अपनाने की आवश्यकता है जिसमें बच्चे का सर्वांगीण विकास किया जा सके। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली निःसन्देह इस दिशा में अत्यधिक प्रभावी व प्रासंगिक है क्योंकि गुरुकुल की दिनचर्या, अनुशासन तथा नैतिक मूल्यों पर आधारित है। उन्हें जीवन को उच्च बनाने के लिए संस्कार प्राप्त होते हैं, शारीरिक उन्नति के लिए, आसन, प्राणायाम तथा समस्त भारतीय व्यायाम, आध्यात्मिक उन्नति के लिए सन्ध्या एवं यज्ञ तथा स्वाध्याय तथा सामाजिक उन्नति के लिए बिना जाति या सामाजिक भेदभाव के समान शिक्षा, समान खानपान व आवास की व्यवस्था होने के कारण

गरीब, अमीर, छोटा या बड़ा तथा अन्य किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रहता। स्वामी जी ने कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में यह उदाहरण यहाँ पर प्रासंगिक होगा कि जब कोई छात्र या छात्रा को गुरुकुल में माता–पिता प्रविष्ट करने के लिए आचार्य के पास जाते हैं तो आचार्य माता–पिता को आश्वस्त करते हुए घोषणा करता है कि मैं इस बच्चे को अपने गर्भ में धारण करता हूँ। इसका तात्पर्य यही है कि आचार्य यह जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता है कि जब तक बच्चे की शिक्षा पूर्ण नहीं हो जाती तब तक वह इसकी इस प्रकार से परवरिश तथा रक्षा करेगा जैसे कोई माता अपने गर्भ में पल रहे बच्चे की करती है। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि गुरुकुल में बच्चे के सर्वांगीण विकास की प्रभावशाली योजना निहित है। स्वामी जी ने कहा कि वर्तमान समय में चल रही शिक्षा प्रणाली में विषय वस्तु की पढ़ाई को छोड़कर व्यक्तित्व विकास, संस्कार निर्माण, नैतिकता आदि का सर्वथा अभाव रहता है इसलिए यह स्पष्ट रूप से सिद्ध हो जाता है कि शिक्षा का उद्देश्य पूरा न कर पाने के कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली अधूरी है। स्वामी जी ने कहा कि उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए हम सबको गुरुकुलों को शक्ति सम्पन्न बनाना चाहिए तथा गुरुकुलों को आर्थिक सहयोग देकर सम्बल प्रदान करना चाहिए। उन्होंने स्वामी धर्मानन्द जी की प्रशस्ति करते हुए स्वामी धर्मानन्द जी के संरक्षण में चल रहे 18 गुरुकुलों एवं छात्रावासों को अधिक से अधिक सहयोग करने की अपील की। स्वामी जी ने कहा कि स्वामी धर्मानन्द जी ने अनेकों ऐसे बच्चों को विद्वान बना कर अपने पैरों पर खड़ा कर दिया है जो अत्यधिक निर्धन तथा पिछड़े आदिवासी परिवारों से आते हैं जो जिन्दगी में कभी पढ़ने तथा पढ़ लिखकर कुछ बनने की कभी सोच ही नहीं सकते थे ऐसे बच्चों को शिक्षित करके उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने का कार्य स्वामी जी करते हैं। यह मानवता की सबसे बड़ी सेवा है जो स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में कर रहे हैं।

भोजन के उपरान्त कन्या गुरुकुल की छात्राओं एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन हुआ। इस प्रदर्शन में आर्यजनों ने हृदय खोलकर धन देकर अपना आशीर्वाद दिया। व्यायाम प्रदर्शन को देखकर हरियाणा, राजस्थान, छत्तीसगढ़, बिहार, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, दिल्ली, झारखण्ड, नागालैंड, मणिपुर से आये हुए सज्जनों ने ब्रह्मचारियों की भूरि–भूरि प्रशंसा की। दिल्ली से पधारे श्री आनन्द कुमार आई.पी.एस. पुलिस अधिकारी ने सभा को सम्बोधित भी किया तथा उन्होंने आस–पास के लोगों को गुरुकुल की सहायता करने की अपील भी की। डॉ. आनन्द कुमार जी ने स्वामी जी के कार्यों को ऋषि दयानन्द का सपना पूर्ण हो रहा है ऐसा कहकर गुरुकुल के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। व्यायाम सम्मेलन एवं संध्योपासना के पश्चात् फिर से गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन हुआ। गुरुकुल के विद्यार्थियों ने अनेक प्रकार के नाटकों, नृत्य तथा भाषणों के द्वारा उपस्थित अपार जन समूह को अनेक शिक्षाप्रद उपदेश दिये। सम्मेलन में मुम्बई से पधारे स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी सरस्वती ने आज से 30 साल पहले गुरुकुल का दृश्य कैसा था और स्वामी जी के परिश्रम तथा ऋषि दयानन्द के कार्यों का बखान करते हुए सभी उपस्थित जन समूह को समाज को ऊपर उठाने के लिए प्रेरित किया। पुनः 8 तारीख को ऋग्वेद पारायण महायज्ञ के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ। इस कार्यक्रम में स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी सोम्यानन्द जी उपस्थित थे तथा कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की आचार्या डॉ. प्रियम्वदा वेद भारती जी ने नारियों का कर्त्तव्य तथा देश में नारियों की शिक्षित नारियों के विषय में अपना उद्बोधन देकर अपार महिला समूह को शिक्षा संस्कार तथा अपने कर्त्तव्यों का वहन करने के लिए प्रेरित किया। आचार्या जी ने गार्गी मैत्रेयी अहिंसा गिरजाबाई, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई का उदाहरण देते हुए नारियों को अपने आपमें पूर्ण होने के लिए गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त करने के लिए आह्वान किया। इस अवसर पर स्वामी प्रणवानन्द जी ने पुनः वेद, वैदिक संस्कृति गुरुकुलीय शिक्षा व्यवस्था और आज की बढ़ती असामाजिकता के ऊपर जोर देकर उपस्थित लोगों को चिन्तन करने पर मजबूर कर दिया, तत्पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ऋषि दयानन्द जी के जयकार लगाते हुए, कपिल, कणाद, जैमनी का उदाहरण देते हुए भारतीय संस्कृति के पतन और युवकों के लड़खड़ाते कदमों को कैसे रोका जाये इस विषय पर अपना मार्मिक वक्तव्य प्रस्तुत किया तत्पश्चात् गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य स्वामी व्रतानन्द जी ने सभी महानुभावों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों का आभार प्रकट करते हुए इस तीन दिवसीय कार्यक्रम की पूर्णाहुति की। इस प्रकार से आर्यों के प्रयास तथा स्वामी धर्मानन्द जी द्वारा संचालित यह गुरुकुल सर्वविध उन्नति पथ पर अग्रसर होते हुए अपने 49वें वार्षिक महोत्सव को सदाबहार बनाते हुए 50वें वर्ष में प्रविष्ट हो गया।

शिक्षा का वर्तमान सन्दर्भ और स्वामी दयानन्द सरस्वती

– एच. के. शर्मा, प्राचार्य

महर्षि दयानन्द का आविर्भाव ऐसे समय में हुआ जब विदेशी हुकूमत भारतीय सभ्यता और संस्कृति को पद–दलित कर भारतीयों के मन में हीन–भावना के तन्तु पनपा रही थी। काले और गोरे का जाति विभाजन कुचक्र चलाकर वे ऐसे भारतीय पैदा करने के प्रयत्न कर रहे थे जो शिक्षित होकर क्लर्की का काम कर सकें और रंग से भारतीय और मन से अंग्रेजियत के हामी हों। ऐसे समय में जब भारतीय शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति पर काले बादल मंडरा रहे थे, तो भारतीय क्षितिज पर प्राची के अंक से ऐसा देदीप्यमान सूर्य स्वामी जी के रूप में उदित हुआ जिसने शैक्षिक, सामाज़िक धार्मिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में फैले प्रदूषण कलांश को धोकर अपने उस प्रकाश से निर्मल बना दिया जो शाश्वत सत्य है। शैक्षिक एवं सामाजिक धरातल पर उन्होंने जो शंखनाद किया वह आर्यावर्त का श्रेष्ठ पुनर्जागरण कहा जा सकता है।

एक प्रकृतिवादी पाश्चात्य शिक्षाशास्त्री जिसका नाम 'रुसो' था उसने शिक्षा जगत को नारा दिया था "बालक स्वतन्त्र उत्पन्न होता है किन्तु धीरे–धीरे उसे बन्धन में बांध दिया जाता है अतः मैं कहता हूँ 'प्रकृति की ओर लौट चलो'।" स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र की आत्मा को पहचाना, आर्य संस्कृति की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया, और छद्म वेशी पाखण्डों के खण्ड–खण्ड कर इस देश के आर्यजनों को नव चेतना से अनुप्राणित कर दिया। उन्होंने कहा जो सत्य है, जो तर्क पर खरा उतरता है वह सदैव स्वीकार्य होना चाहिए और जो इससे भिन्न है वह त्याज्य होना चाहिए। उन्होंने देश को बहरुपियों से बचाकर शिक्षा और समाज का भारतीयकरण सही अर्थ में कर डाला। 'मातृमान, पितृमान, आचार्यवान् पुरुषो वेद' की पुनीत भूमि पर रचे बसे गुरुकुल पद्धति के शिक्षा आश्रमों को चिन्हित कर उन्होंने नारा दिया वेदों की ओर लौट चलो।

वर्तमान समय की आवश्यकता और दृष्टिकोण के विस्तार से स्वामी दयानन्द अपरिचित नहीं थे। वे जानते थे–वर्तमान युग विज्ञान का युग है। इस युग में संकुचित दृष्टिकोण, रुढ़िवादित और अन्धविश्वासों के मायाजालों में फंसा रहना अनर्थकारी है। इसलिए उन्होंने लोगों को वैज्ञानिक एवं तार्किक दृष्टि दी। भूत प्रेत गण्डे ताबीज, ओझाओं के झाड़–फूंक आदि के कुचक्रों में न जाने कितने स्त्री पुरुष दिगभ्रमित हो रहे थे। कर्मकाण्डी और पाखण्डी पोपों के चंगुल में बहुत लोग फंसे थे यहां तक कि नर बलि तक को मान्य मान लिया गया था। अभी कुछ दिन पूर्व गणेश जी की मूर्ति को दूध पिलाने की घटना ज्यादा पुरानी नहीं जब न केवल अशिक्षित नर–नारियों ने अपितु अनेक शिक्षितजनों ने भी इसे सत्य मानकर दिन छिपते छिपते मूर्ति को दूध पिलाया था। पितृ श्राद्धों और नमः तुम्बाय के खोखलेपन आज भी जन–मन को बहका रहे हैं। महर्षि ने इन सामाजिक विसंगतियों को दूर कर तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि देकर लोगों को ठग और स्वार्थी लोगों से बचाने का कवच देकर सामाजिक शिक्षा में एक अध्याय जोड़ा। पाखण्ड खण्डिनी ध्वज फहराकर लोगों को गुमराह न होने की शिक्षा दी। समाज को सुशिक्षित और सुसंस्कारित करने का बीड़ा उन्होंने उठाया। सामाजिक परिवर्तन की 'शिक्षा' संवाहिका कही जाती है। और तर्क के डण्डे से विष कुंभों को महर्षि दयानन्द ने चूर–चूर कर समाजोनति का शैक्षिक मार्ग प्रशस्त किया।

किं बहुना, महर्षि जानते थे कि उपदेशों का प्रभाव स्थायी चिकित्सा नहीं है। पाश्चात्य विद्वान और शिक्षाविद सुकरात की यह विशेषता थी कि वह लोगों को प्रश्नोत्तर शैली से अपनी बात समझता था। आजकल बी. एड. आदि में विद्यार्थियों को भाषण पद्धति के स्थान पर प्रभावी प्रश्नोत्तर शैली में पढ़ाने का आग्रह है। एक चैतन्य शिक्षक के नाते स्वामी जी ने जो कुछ जन–जागरण की शिक्षा दी वह प्रश्नोत्तर शैली में ही है। उनके शिक्षकीय आदान प्रदान की यह शैली प्रमाण सहित होने के कारण बड़ी प्रभावी थी।

आजकल साक्षरता पर बड़ा जोर दिया जा रहा है, सभी को शिक्षित करने का लक्ष्य है। इस दिशा में लोक जुम्बिश, शिक्षाकर्मी योजना, सरस्वती योजना और शिक्षा के सार्वजनीकरण की योजना इस हेतु चलाई जा रही है। इस पर करोड़ों रुपये व्यय किये जा रहे हैं। एक सौ तिरसठ वर्ष पहिले इसका एक व्यावहारिक हल बताया जो सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास से अविकल उद्धृत है –

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

यदि न आते देव दयानंद

–विमलेश बंसल 'आर्या'

पंच यज्ञ घर–घर न होता, दूर विकृति न होती।
यदि न आते देव दयानंद, आर्य धरा रहती रोती।।
घटा टोप कालिमा अंधेरा, कोहरा बढ़ा जा रहा था।
विदेशियों की कुटिल धुंध से, सूरज ढका जा रहा था।
सत्य–अर्थ–प्रकाश न होता, सब दुनिया तम में सोती।।
यदि न आते .....
पंच यज्ञ घर–घर .....
पीर मुहम्मद पोपों सारे, सर्प कुण्डली बने पिटारे।
चूहे और छछूंदर दोनों, कुतर रहे थे वस्त्र हमारे।
ब्रह्मा का स्थान न मिलता, बुरके में नारी होती।।
यदि न आते .....
पंच यज्ञ घर–घर .....
आओ हम सब आर्य विमल बन, ऋषि दयानंद को शीश झुकाएँ।
उनके पदचिह्नों पर चलकर, जग वैदिक उद्यान खिलायें।
वेद आर्य स्वाभिमान न जगता वैदिक संस्कृति क्या होती।।
यदि न आते .....
पंच यज्ञ घर–घर .....

पता: 329 द्वितीय तल संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली–65
चल दूरभाष–8130586002
E-mail : vimleshbansalarya69@gmail.com

"संतानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना, माता-पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।" उन्होंने आगे लिखा।

"राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि, पांचवें–आठवें वर्ष के आगे अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रखें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें। जो न भेजे, वह दण्डनीय हो।"

आजकल महिला शिक्षा की बात बहुत उभर कर आ रही है। बहुत से क्षेत्र आज भी महिला–शिक्षा में काफी पिछड़े हुए हैं। लड़कियों को 'चूल्हा–चक्की कर्म' का एक अंग अभी भी माना जाता है कम आयु में बालिकाओं का विवाह या लड़कियों का विद्यालय में नामांकन अभाव आज की ज्वलन्त समस्याएँ हैं। देश में नारी शिक्षा की दशा शोचनीय है। स्त्रियाँ लक्ष्मी से दासी की परिधि में सिमट रही हैं। बलात्कार, हिंसा, आत्महत्या जैसे विभत्स दृश्य नारी–अशिक्षा के मुखर पृष्ठ हैं, इन सबसे निजात पाने के लिए स्वामी जी ने नारी को सम्मानीय पद पर लाकर प्रतिष्ठित कर दिया। लिंग भेद से अन्तर न करना, वेदाध्ययन की अधिकारिणी होना, आदि धरातलों पर उन्होंने नारियों को उनका अधिकार दिलाने में कोई कोर कसर नहीं रखी। 'रूपकंवर' जैसे सती प्रथा के दुराचरण को समाप्त करके उन्होंने नारियों की प्राण रक्षा का पुनीत कार्य किया। वे मासूम बच्चियाँ। वे निरी विधवाएँ।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बात है कि दयानन्द सरस्वती ने लड़कियों की शिक्षा की बात कह कर शैक्षिक समाज में एक क्रान्ति ला दी। उन्होंने वेदों का उदाहरण देते हुए कहा –

- लड़कियों को भी लड़कों के समान पढ़ाना चाहिए।

- प्रत्येक कन्या का अपने भाई के समान उपनयन संस्कार होना चाहिए।

- लड़कियों का विवाह न तो बाल्यावस्था में हो, न उनकी इच्छा के विरुद्ध।

- पुत्री को पुत्र के समान और विधवा को विधुर के समान अधिकार है।

आज के सन्दर्भ में जो आर्य कन्या विद्यालय/महाविद्यालय इस दिशा में शिक्षा का प्रसार करने में जुटे हैं, सचमुच वे शिक्षा जगत की महत्त्वपूर्ण और सामाजिक सेवा कर रहे हैं।

आजकल विद्यालयों/महाविद्यालयों में सह शिक्षा एक प्रचलित शिक्षा है सरकारी शिक्षालयों में संसाधनों के अभाव में कदाचित् इसे स्वीकारा गया है। किन्तु आये दिन प्रधानाध्यापकों/आचार्यों के सम्मुख (सह शिक्षागत दोषों के परिणाम स्वरूप) छात्राओं की प्रायः शिकवा शिकायतें, अशोभनीय व्यवहारगत हरकतों की दास्तानें सुनने देखने में आती हैं। वयस्क किशोर–किशोरियों के मध्य विषम लिंगियों के प्रति आकर्षण के यह दृश्य मनोवैज्ञानिक सत्य हैं। इसे ध्यान में रखकर स्वामी जी ने कहा था – लड़के और लड़कियों के अलग–अलग विद्यालय हों और इनमें एक दूसरे का आवागमन वर्जित हो। वर्तमान समय में समानता का मौलिक अधिकार दिया गया है। शिक्षा जगत में शैक्षिक अवसरों की समानता 'Equal opportunites of Education' बहुचर्चित पाठ्य प्रकरण है और इसके विभिन्न अर्थ दिये जा रहे हैं। स्वामी जी की पारखी दृष्टि से यह ओझल नहीं हो सका और उन्होंने 'समान शैक्षिक अवसर' प्रकरण पर अपना मन्तव्य इस प्रकार व्यक्त किया है –

यदि वेदों का आश्रय लिया जाये और तर्क के आधार पर सोचा जाये तो मानव मानव में कोई भेद मालूम नहीं होता। वेदों में कहा गया है कि "एकैव मानुष जाति।" स्वामी जी ने समस्त मानव जाति को एक मानते हुए उसके आचरण को प्रधानता दी है। उन्होंने गुण, कर्म और स्वभाव के अनुरूप सभी को शिक्षा प्रदान करने की बात कही। अवर्ण और सवर्ण के जन्मगत भेद गर्तों को जातिगत, धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने की दृष्टिमति देते हुए कहा –

"जो दुष्ट कर्मकारी द्विज को श्रेष्ठ और श्रेष्ठ कर्मकारी शूद्र को नीचा माने तो इससे परे पक्षपात, अन्याय, अधर्म दूसरा अधिक क्या होगा।"

इस उद्धरण से शिक्षा के प्रति उनकी सोच और आचरण आधारित शिक्षा के लिए सभी को द्वार उन्मुक्ति का सामयिक परिचय मिलता है।

शिक्षा, यद्यपि एक सतत प्रवाहिता निर्झरणी है तथापि आज के संदर्भ में हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को कभी नहीं भुला सकते। गंगा तो बहेगी, किन्तु महर्षि के हिमालयी उद्गम स्थलों की अनदेखी करना हमारी भूल होगी। महर्षि दयानन्द जी उदात्त भावनाओं और नैसर्गिक बोध के तत्त्वेत्ता थे। देश के अग्रणी चिन्तक, समाज सुधारक, क्रान्ति के अग्रदूत, शैक्षिक दृष्टिदाता, संस्कृति के शाश्वत कोष मातृभाषा, मातृ संस्कृति, मातृभूमि और मातृशक्ति के प्रति उनके मन में अगाध लगाव था। उनका शैक्षिक चिन्तन इसी लगाव से प्रभावित था। 'भारत भारतीयों के लिए है' और इसकी शिक्षा नीति रीति भी भारतीयता से परे नहीं हो सकती। बापू ने 'हरिजन' के एक अंक में सन् १९२२ में लिखा था दयानन्द जी की आत्मा आज भी हमारे बीच काम कर रही है। वे आज उस समय से भी अधिक प्रभावशाली हैं जबकि वे हमारे बीच सदेह थे।" जिस देव दिव्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने शिक्षा के माध्यम से जाति संप्रदाय विहीन समाज की संरचना का, नारी के सम्मान का, निरक्षरता निवारण का और सुसंस्कारिता की शिक्षा का जो आलोक भारतीय खितिज से हमें परोसा है उस देदीप्यमान सूर्य को शत–शत नमन।

पृष्ठ–2 का शेष

शिवभक्त चेतें! क्या शिवरात्रि का शिव शंकर नहीं?

प्रत्यय द्वारा शंकर, मयस्कर शब्द निष्पन्न होते हैं। जिनका चतुर्थी में शंकराय, मयस्कराय प्रयोगरूप बनता है। जिनका अर्थ है आध्यात्मिक, आधिदैविक सुख करने वाले के लिए।

इसी प्रकार शिव शब्द से अतिशय अर्थ में तरप् प्रत्यय करके शिवतर शब्द बनता है, पुनः चतुर्थी में शिवतराय प्रयोगरूप बना है। जिसका अर्थ है आधिभौतिक = सांसारिक सुख के अतिशय कारण के लिए। प्रकृति, सभी का कल्याण, सुख करती है अतः शिव है। ईश्वर भी सबका कल्याण, सुख करता है, किन्तु प्रकृति से अतिशय रूप में करता है, अतः वह शिवतर है।

इस प्रकार नमः शम्भवाय.... इस मन्त्र का अर्थ हुआ –

हे ईश्वर! आप शम्भवाय = शम् आध्यात्मिक, मोक्ष सुख उत्पन्न करने वाले के लिए च = और, मयोभवाय = आधिदैविक मन, इन्द्रियादि का सुख उत्पन्न करने वाले के लिए नमः = स्तुति है, च = और, शंकराय = शम् = मोक्ष सुख को करने वाले के लिए, च = और मयस्कराय = मयस्–मन, इन्द्रिय आदि के सुख को करने वाले के लिए, नमः = स्तुति है, च = और, शिवाय = धन–धान्य आदि मंगल सुख करने वाले के लिए, च = और, शिवतराय = अतिशय पूर्वोक्त मंगल, सुख स्वरूप के लिए, नमः = स्तुति है।

तात्पर्य हुआ उस अद्वितीय सत्ता के जैसे ओ३म्, ब्रह्म, ईश्वर आदि नाम हैं वैसे ही उसके शम्भव, मयोभव, शंकर, मयस्कर, शिव, शिवतर नाम है। वह ही मोक्ष आदि तीनों सुखों को उत्पन्न करता है व प्रदान करता है। सुखों की उत्पत्ति का वह ही करः, कर्ता = करने वाला है। शिव भिन्न है, शंकर भिन्न है यह बुद्धिभेद अज्ञान मात्र है, सत्यज्ञान पूर्ण तथ्य नहीं। शिवभक्त किसी भ्रम में न रहें।

ओ३म् पदवाच्य शिव, शंकर ईश्वर के इसी विशाल स्वरूप को जानने के लिए शिवरात्रि पर्व की फाल्गुन कृष्ण चतुदर्शी की रात गुजरात प्रान्त टंकारा गाँव के ज्ञानसूर्य महर्षि दयानन्द ने महत्त्वपूर्ण अध्यवसाय किया था। उस अध्यवसाय में उन्होंने शिवरात्रि पर्व पर व्रत क्या किया! सत्य ही खोज निकाला। उस सत्य का प्रकाश महर्षि दयानन्द ने नमः शम्भवाय. मंत्र के अर्थों में निर्दिष्ट किया है।

नमः शम्भवाय च. इस यजुः मन्त्र के अर्थ महर्षि दयानन्द ने यजुर्वेद भाष्यम्, आर्य्याभिविनयः, पंचमहायज्ञविधिः आदि स्थलों पर किये हैं। महर्षि ने उन अर्थों में सर्वत्र परमात्मा के शिव, शंकर स्वरूपों के वैविध्य का निर्देश करते हुए सुख, कल्याण के गम्भीर तत्त्वों का संकेत किया हैं

महर्षि द्वारा संकेतित मन्त्रार्थों के सुख, कल्याण के गम्भीर तत्त्व प्रत्येक शिव, शंकर के उपासक के लिए अति उपादेय हैं। उदाहरणतः पंचमहायज्ञविधिः में निर्दिष्ट महर्षि के गम्भीर भाव हैं :–

नमः शम्भवाय च = जो सुखस्वरूप, मयोभवाय च = संसार के उत्तम सुखों का देने वाला, नमः शंकराय च = कल्याण का कर्ता, मोक्षस्वरूप, धर्मयुक्त कामों को ही करने वाला, मयस्कराय च = अपने भक्तों को सुखका देने वाला और धर्म कामों में युक्त करने वाला, नमः शिवाय च शिवतराय च = अत्यन्त मंगलस्वरूप और धार्मिक मनुष्यों को मोक्ष सुख देने हारा है, उसको हमारा बारम्बार नमस्कार हो।

– पंच यज्ञविधि, सन्ध्यो. पृ. 27।।

इन उपर्युक्त वेदमन्त्र एवं महर्षि दयानन्द के मन्त्रार्थ से भली–भांति परिज्ञात है कि शिव, शंकर पद भी एक अद्वितीय सर्वव्यापक ईश्वर के ही नाम हैं, भिन्न–भिन्न पदार्थों के नहीं। सर्वव्यापक, निराकार ब्रह्म आदि नाम स्वरूप वाला ईश्वर ही सबका उपास्य है। उसकी ही नित्य एवं शिवरात्रि पर्व पर उपासना की जाती है। वह ही शिव है, शिवतर है, शंकर है, शम्भव है, मयोभव है, मयस्कर है। महर्षि दयानन्द ने ईश्वर के शिव, शंकर आदि स्वरूपों को प्रतिपादित कर जहाँ अध्यात्म के गम्भीर रहस्य का प्रकाश किया है, वहीं शिवरात्रि पर्व के परिप्रेक्ष्य में महत्त्वपूर्ण मार्गदर्शन दिया है कि शिवोपासक शिव, शंकर भिन्न हैं, इस भ्रमजाल को तोड़ें और शिवरात्रि पर्व व्रत को सार्थक करें।

– प्राचार्या पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी–10
सम्पर्क – आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज–307027 (राज.)

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान के अन्तर्गत

आर्य समाज दादों, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश का 64वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 13 से 15 फरवरी, 2016 तक आर्य समाज दादों, अलीगढ़ में हर्षोल्लास के साथ वार्षिकोत्सव समारोह के रूप में सम्पन्न हुआ जिसमें डॉ. ऋषिपाल शास्त्री ने कुशलता के साथ मंच संचालन किया। समारोह में अनेकों संगीतकार तथा व्याख्याकारों ने वैदिक संस्कृति पर विचार रखकर हजारों लोगों को मंत्र मुग्ध कर दिया, आर्य नेता श्री सुरेश यादव (ब्लाक प्रमुख) ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज हर क्षेत्र में आर्य विचारों की बहुत आवश्यकता है। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपदेशक ब्र. कड़कदेव ने तीनों दिन वेद मंत्रों से सरल एवं व्यावहारिक रूप से योग पर जनता का मार्ग दर्शन किया, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ के प्रधान ब्र. पूर्ण सिंह ने तीनों दिन अपने क्रांतिकारी व्याख्यान दिये और बहन रीमा (संगीतकार) ने अपनी संगीत के माध्यम से आर्य जनता को मंत्र मुग्ध कर दिया। आर्य जनता से खचाखच भरे हुए मंदिर परिसर को अनेकों विद्वानों और संगीतकारों ने बड़े सरल और व्यावहारिक विचार रखकर आर्य जनता का मार्ग दर्शन किया। आर्य समाज मंदिर दादों के पदाधिकारियों ने बड़े परिश्रम के साथ भाग लिया और सफलता के लिए कड़ी मेहनत की जिनमें श्री चन्द्रपाल सिंह, श्री प्रेमपाल सिंह, श्री शिशुपाल सिंह, श्री हेमसिंह, श्री रूपसिंह, श्री सरनाम सिंह आदि मुख्य थे। आर्य समाज दादों के प्रधान श्री भगत सिंह ने सभी आर्य भक्तों को कार्यक्रम की सफलता के लिए हार्दिक धन्यवाद किया।

– डॉ. ऋषिपाल शास्त्री

अर्धकुम्भ मेला 2016 के अवसर पर

सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में

विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन एवं पाखण्ड–खण्डिनी पताका का आरोहण

20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक

पूर्व वर्षों की भांति अर्धकुम्भ मेला हरिद्वार में जनवरी, 2016 से प्रारम्भ होगा। इस अवसर पर विभिन्न मठ, मंदिर एवं धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के पंडाल सजेंगे। अतः सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड एवं वैदिक विरक्त मण्डल की संयुक्त बैठक में यह निश्चय किया गया है कि 20 मार्च से 13 अप्रैल, 2016 तक इस अवसर पर हरिद्वार मे आने वाली धर्म पारायण जनता को धर्म के सच्चे स्वरूप से अवगत कराने के लिए एवं नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, मांसाहार एवं धार्मिक अन्धविश्वास जैसी कुरीतियों से दूर रहने का संकल्प दिलाने के लिए तथा वेद प्रचार के माध्यम से ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझाने के लिए एक विशाल वेद प्रचार शिविर का आयोजन किया जायेगा। शिविर में चतुर्वेद पारायण यज्ञ, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सम्मेलन योग साधना शिविर तथा नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, जैसी सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जन–चेतना रैली आयोजित की जायेगी। इस अवसर पर जहाँ आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान, भजनोपदेशक एवं कार्यकर्ता जनता का मार्ग दर्शन करेंगे वहीं देश के कोने–कोने से आर्यजन अपनी–अपनी समाजों के बैनर लेकर शिविर में भाग लेंगे।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द की परम्परा को जीवित रखते हुए पाखण्ड खण्डिनी पताका का आरोहण भी किया जायेगा जो मेले में विशेष आकर्षण का कार्य करेगी। आप सभी से निवेदन है कि अभी से मेले में आने का मन बना लें तथा इस महत्त्वपूर्ण आयोजन को सफल बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से तथा अपनी समाज की तरफ से अधिक से अधिक धनराशि तथा खाद्य सामग्री (दाल, चावल, आटा, घी, चीनी, सब्जी आदि) दान स्वरूप देकर पुण्य के भागी बनें तथा वेद प्रचार के इस महत्त्वपूर्ण कार्य में अपना योगदान प्रदान करें। वेद प्रचार शिविर का विस्तृत कार्यक्रम बहुत शीघ्र आर्यजनों के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा। इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी के लिए सभा कार्यालय से सम्पर्क किया जा सकता है। अपना सहयोग या दान राशि सार्वदेशिक सभा कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से अथवा **''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा''** के नाम चैक, बैंक ड्राफ्ट आदि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के नाम भेजने की कृपा करें।

निवेदक

स्वामी आर्यवेश	**स्वामी दिव्यानन्द**	**स्वामी प्रणवानन्द**	**प्रो. विट्ठलराव आर्य**	**पं. माया प्रकाश त्यागी**
प्रधान–सार्व.सभा	प्रधान वैदिक विरक्त मण्डल	कोषाध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल	मंत्री–सार्व.सभा	कोषाध्यक्ष–सार्व.सभा
गोविन्द सिंह भण्डारी	**सुखदेव वर्मा**	**दयाकृष्ण काण्डपाल**	**इं. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**डॉ. वीरेन्द्र पंवार**
प्रधान–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	कोषाध्यक्ष–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	मंत्री–आ.प्रति. सभा उत्तराखण्ड	प्रधान, आर्य समाज देहरादून	प्रबन्धक आर्य समाज हरिद्वार

आर्य समाज की गतिविधियाँ

वेद एवं ज्योतिष सम्मेलन (संगोष्ठी) का भव्य आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से तथा वैदिक मिशन मुम्बई की ओर से दिनांक 26–27 मार्च, 2016 को आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में वेद एवं वेदांग ज्योतिष विषय पर एक सम्मेलन संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। इनके अतिरिक्त, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्री मिठाई लाल सिंह जी, श्री अरुण अबरोल, कै. रुद्रसेन जी आर्य, श्री चन्द्रभानु जी आर्य, प्रधान आर्य समाज न्यूयार्क, अमेरिका, ठा. विक्रम सिंह जी सहित अनेकों विद्वान तथा आर्य नेता पधार रहे हैं। इस कार्यक्रम में विद्वानों द्वारा ग्रह–उपग्रह, नक्षत्र, लग्न, मुहुर्त, जन्म कुण्डली तथा फलित ज्योतिष आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया जायेगा। सम्पूर्ण कार्यक्रम, आर्य समाज मुम्बई विट्ठलभाई पटेल रोड सान्ताक्रुज (पश्चिम) मुम्बई में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर 26 मार्च को विशेष यज्ञ सहित प्रातः 7 बजे से रात्रि 9 बजे तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। 27 मार्च को प्रातः 8 बजे से विशेष यज्ञ के उपरान्त 4.30 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

– सोमदेव शास्त्री, अध्यक्ष वैदिक मिशन मुम्बई

गांव बंडाला में स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती द्वारा संचालित स्वामी आयुर्वेदिक आश्रम के नव निर्मित भवन का शुभारम्भ दिनांक 28 फरवरी, 2016 (रविवार) को किया जायेगा

प्रातः 9 बजे से 12 बजे तक चलने वाले कार्यक्रम के अवसर पर आप सपरिवार सादर निमंत्रित हैं। आप सबसे अनुरोध है कि आप समय पर पहुंच कर समारोह की शोभा बढ़ाएँ।

निवेदक – स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती, गांव बंडाला, जिला–जालंधर, सम्पर्क सूत्र–9872542952

शोक समाचार

श्री देवेन्द्र कुमार आर्य सुपुत्र स्व. रामलखन प्र. आर्य मंत्री आर्य समाज मंदिर बाढ़ (पटना) का देहावसान दिनांक 20 दिसम्बर, 2015 को हो गया। ये विद्वान, लगनशील एवं ज्ञानवान थे। आर्य समाज के ज्योति को जगाये रखने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया था। अपने जो कार्य किया वह अविस्मरणीय है। इनकी क्षतिपूर्ति होना मुश्किल है।

आर्य समाज मंदिर बाढ़ (पटना) के प्रांगण में साप्ताहिक सत्संग के बाद दो मिनट मौन रखकर उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई। दुःख की घड़ी में उनके पुत्र एवं परिवार को धैर्य और सहनशीलता धारण एवं हिम्मत प्रदान करने की प्रार्थना भी की गई।

– ओम प्रकाश गुप्ता, उपमंत्री आर्य समाज मंदिर, बाढ़, पटना–803213 (बिहार)

ओ३म्

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

के तत्वावधान में

आर्य समाज के संस्थापक, समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी

192वां महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव

शुक्रवार, 4 मार्च 2016, प्रातः 11:00 से 2:00 बजे तक

स्थान: स्पीकर हॉल, कान्स्टीट्यूशन क्लब

रफी मार्ग, नई दिल्ली–110001 (निकट मैट्रो स्टेशन पटेल चौक)

मुख्य अतिथिः

डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा (अध्यक्ष, अखिल भारतीय खेल परिषद् (राज्य मंत्री स्तर))

श्रीमती शीला दीक्षित (पूर्व मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार)

विशिष्ट अतिथिः

श्री श्याम जाजु (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व प्रदेश प्रभारी, भाजपा)

स्वामी आर्यवेश जी (अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

अध्यक्षताः डॉ. अशोक कुमार चौहान

(संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

ध्वजारोहण	स्वागताध्यक्ष	मुख्य वक्ता
श्री मायाप्रकाश त्यागी (कोषाध्यक्ष, सार्वदेशिक सभा)	ठाकुर विक्रम सिंह (अध्यक्ष, राष्ट्र निर्माण पार्टी)	डॉ. जयेन्द्र आचार्य (आचार्य, आर्ष गुरुकुल, नोएडा)

गरिमामयी उपस्थिति

श्री आनन्द चौहान (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान), चौ. लाजपतराय आर्य (करनाल), श्री राजीव कुमार (निदेशक, परम डेयरी ग्रुप), डॉ. रिखबचन्द जैन (अध्यक्ष, टी. टी. ग्रुप), श्री प्रभात शेखर (मनोहर लाल ज्वेलर्स), श्री सुरेन्द्र कोहली (सुप्रसिद्ध समाज सेवी), श्री नवीन रहेजा (रहेजा डेवैलपर), श्री ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मजिस्ट्रेट)

विशेष आमन्त्रित: गायत्री मीना, प्रि. अंजु महरोत्रा, रविदेव गुप्ता, रवि चड्डा, रविन्द्र मेहता, सुरेन्द्र गुप्ता अमरनाथ गोगिया, सोहनलाल मुखी, उर्मिला आर्या, चन्द्रप्रभा अरोड़ा, विजयारानी शर्मा, विकास गोगिया अंजू जावा, मनोहरलाल चावला, राकेश ग्रोवर, ओमप्रकाश जैन, सुभाष चान्दना, राजेश आहुजा, राजेन्द्र खारी

जलपानः प्रातः 10:30 बजे | **निवेदक** | ऋषि लंगरः दोपहर 2:00 बजे

डॉ. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य	दर्शन अग्निहोत्री
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष
9810117464	9013137070	9711523412	9810033799

यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, कृष्णचन्द पाहुजा, विश्वनाथ आर्य (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) दुर्गेश आर्य, देवेन्द्र भगत, राकेश भटनागर, सुभाष बब्बर (राष्ट्रीय मंत्री)

आनन्दप्रकाश आर्य, सत्यभूषण आर्य, स्वतन्त्र कुकरेजा (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष) प्रबन्धक: सौरभ गुप्ता-अरुण आर्य प्रवीण आर्य, सुरेश आर्य, वीरेन्द्र योगाचार्य, सुशील आर्य (राष्ट्रीय मंत्री)

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली–110007, मो. 9868661680

E-mail: aryayouthn@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com

Group: aryayouthgroup@yahoogroups.com • join-http:// www.facebook.com/group/aryayouth

सैनी नर्सिंग कालेज तथा नन्दन कानन पार्क में भैषज यज्ञ यज्ञ की महिमा विश्व भूमि बचाओ आन्दोलन ने स्वीकारी

– यशपाल 'यश'

जयपुर : 19 फरवरी, ''स्वाईन फ्लू एवं प्रदूषण निवारण यज्ञ पखवाड़े'' के अन्तर्गत आज रामपुरा मोहाना मंडी स्थित सैनी नर्सिंग कालेज में तथा निर्माण नगर के नन्दन कानन उद्यान में यज्ञ सम्पन्न हुए।

कार्यक्रम संचालक सुनील अरोड़ा के अनुसार समिति संयोजक एवं यज्ञ के ब्रह्मा यशपाल 'यश' ने ''भैषज यज्ञों'' के वैज्ञानिक व आध्यात्मिक महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ के विश्व भूमि बचाओ आन्दोलन ने यज्ञ के पृथ्वी सूक्त को स्वीकारा है। प्रसिद्ध भजनोपदेशक कु. भूपेन्द्र सिंह ने श्रोताओं में जोश भरते हुए गीत सुनाये। कालेज प्रबन्धक दीपांकर एवं निर्माण नगर के उद्यान समिति अध्यक्ष हरि प्रसाद पारीक ने आभार जताया। यज्ञ के यजमान हर गोपाल मनचन्दिया रहे।

आर्य समाज बांकनेर (खैर) अलीगढ़ में वेद प्रचार सम्पन्न मानव शुभ कर्मों को करते हुए ही मोक्ष का अधिकारी

– स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

ग्राम बांकनेर (खैर) जिला–अलीगढ़ के आर्य समाज मंदिर में दिनांक 15 से 19 फरवरी, 2016 तक पांच दिवसीय वेद ज्ञान प्रचार कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न। इस कार्यक्रम में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त प्रवचन करते हुए स्वामी सोम्यानन्द जी सरस्वती ने मानव मात्र के उत्थान हेतु संध्या, स्वाध्याय, सेवा, सत्कार, सत्संग और दान को आवश्यक बताया तथा समाज में विद्यमान पाखण्ड, वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष, अत्याचार, बलात्कार, हिंसा और अस्तेय से दूर रहने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि मानव शुभ कर्मों को करते हुए ही मोक्ष का अधिकारी बन सकता है। कुमारी सविता और श्री बच्चू सिंह (खानपुर) अलीगढ़ ने अपने भजनों और उपदेशों से वैदिक धर्म का अनुसरण ही मानव के कल्याण हेतु आवश्यक बताया और जनता में व्याप्त पाखण्ड पर विशेष प्रहार किया। – ओम प्रकाश शर्मा, संरक्षक आर्य समाज बांकनेर, अलीगढ़

आर्य समाज में सामूहिक उपनयन संस्कार सम्पन्न

बसवकल्याण : बसवकल्याण आर्य समाज मदिर में सामूहिक उपनयन संस्कार बड़े पैमाने पर सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

हिन्दू धर्म शास्त्रों में सोलह संस्कारों का बड़ा महत्त्व रहा है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने वेदानुसार उपनयन संस्कार को विशेष महत्त्व दिया है। कर्नाटक आर्य प्रतिनिधि सभा बेगसुर के अन्तर्गत आर्य समाज बसवकल्याण की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में विशेष आमंत्रित श्रीमान सुभाष जी अष्टिकर प्रधान कर्नाटक आर्य समाज बेगुर तथा पुरोहित पंडित वेद कुमार जी वेदालंकार उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) उपस्थित थे।

इस उपनयन संस्कार कार्यक्रम में 40 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के लिए आर्य समाज प्रांगण में 12 यज्ञकुंड का आयोजन किया गया और उपनयन संस्कार व्यवस्था निम्न पुरोहित श्री अर्जुनराव सोमवंशी, श्री सुभाष सुत्रावे श्री संजीव जाधव, श्री अशिनाथराव गुरुजी, श्री शंकरराव तबकोग, श्री माणिकराव लाड आदि ने की तथा बच्चों का वेदी पर मार्गदर्शन किया। इस कार्यक्रम के पुरोहित महाराष्ट्र से पूज्य पंडित वेद कुमार जी वेदालंकार ने मंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारम्भ किया। इस उपनयन कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों के पारिवारिक जन ने बहुत संख्या में उपस्थित हुए। इस कार्यक्रम को यशस्वी बनाने में प्रधान, मंत्री एवं कोषाध्यक्ष और आर्य समाज के अनेक पदाधिकारियों एवं सहयोगियों ने अपनी तरफ से बहुत मेहनत किया।

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 26–27 फरवरी, 2016
प्रकाशन की तिथि : 25 फरवरी, 2016
वैदिक सार्वदेशिक
25 फरवरी से 3 मार्च, 2016
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

अश्वारोही बनो

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्त्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।।

—अ० १९/५३/१

ऋषिः—भृगुः।। देवता—कालः।। छन्दः—त्रिष्टुप्।।

विनय—कालरूपी महाबली घोड़ा चल रहा है। यह सब संसार को खींचे लिये जा रहा है। इस विश्व के सब प्रकार के जगतों में सात तत्त्व काम कर रहे हैं। (सब जगतों में सात लोक, सात भूमियाँ हैं, सप्त प्रकार की सृष्टि है और प्रत्येक प्राणी में भी सात प्राण, सात ज्ञान और सात धातु हैं)। ये ही सात रस्सियाँ (रश्मियाँ) हैं, जिनसे यह विश्व उस कालरूपी घोड़े से जुड़ा हुआ है। काल की महाशक्ति से जुड़कर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब मनुष्य, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुएँ चक्र की भाँति घूम रही हैं। इन असंख्य भुवनों में, उत्पन्न चर या अचर पदार्थों के असंख्यात अक्षों (व्यक्ति–केन्द्रों) को गति देता हुआ, यह महाशक्ति काल अपने इन भुवन–चक्रों द्वारा इस समस्त विश्व को चला रहा है। इस प्रकार यह संसार न जाने कब से चलाया जा रहा है! हम परम तुच्छ मनुष्यों की क्या गणना, असंख्यों वर्षों की आयुवाले बहुत–से सौर–मण्डल भी जीर्ण होकर सदा से इस अनन्तकाल में लीन होते गये हैं, परन्तु कभी जीर्ण न होता हुआ यह कालदेव आज भी अपनी उसी और उतनी ही शक्ति से इस विश्व–ब्रह्माण्ड को खींचे लिये जा रहा है। इस कालदेव की मेरे कोटि–कोटि प्रणाम हैं। भाइयो! क्या तुम्हें यह कभी जीर्ण न होनेवाला, सब विश्व को चलाने वाला महावीर्य अश्व दीख रहा है? याद रक्खो इस महावेगवान् अश्व की सवारी वे ही ले–सकते हैं जो ज्ञानी हैं– जो समय को पहचानते हैं, जिनकी दृष्टि इस सबको हिलाने वाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल हो गई है, अतएव जो क्रान्तदर्शी हैं, जो विशाल भूत और भविष्य को दूर तक देख रहे हैं, जो अज्ञानी या अतिचञ्चल मनुष्य, स्थिर ज्ञान–प्रकाश को न पाकर क्षुद्र दृष्टि वाले और काल के महत्त्व को न पहचानने वाले हैं, वे तो काल–रथ पर नहीं चढ़ सकते और न चढ़ सकने के कारण वे या तो कुचले जाते हैं, या कुछ दूर तक घिसटते जाकर कहीं इधर–उधर दूर जा पड़ते हैं और मार्ग–भ्रष्ट हो जाते हैं, या इसके नीचे यूँ ही पड़े रहकर नष्ट हो जाते हैं, इसीलिए काल नाम मृत्यु का हो गया है, परन्तु वास्तव में काल तो वह महाशक्तिवाला, महावेगवाला यान है, जिस पर सवार होकर हम बड़ी जल्दी अपना मार्ग तय करके लक्ष्य पर पहुँचे सकते हैं, अतः आओ, हम आज से काल के सवार बनें, अपने पल–पल, क्षण–क्षण का सदा सदुपयोग करें, इस महाशक्ति को कभी भी गंवाएँ नहीं और काल की इस विशालता को देखते हुए सदा ऊँची–विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्त्तव्य निश्चय किया करें।

शब्दार्थ—सप्तरश्मिः=सात रस्सियों वाला ! **सहस्त्राक्षः**=हजारों धुरों को चलाने वाला **अजरः**=कभी भी जीर्ण, बुढ्डा न होने वाला **भूरिरेताः**=महाबली **कालः अश्वः**=समयरूपी घोड़ा **वहति**=चल रहा है–संसार–रथ को खींच रहा है। **विश्वा भुवनानि**=सब उत्पन्न वस्तुएँ, सब भुवन **तस्य**=उसके **चक्राः**=चक्र हैं– उस द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। **तम्**=उस घोड़े पर **विपश्चितः**=ज्ञानी और **कवयः**=क्रान्तदर्शी लोग ही **आरोहन्ति**=सवार होते हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

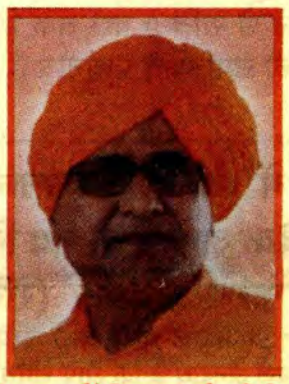

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

आर्य समाज के महान नेता, त्यागी–तपस्वी संन्यासी,
युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के 79वें जन्मदिवस के अवसर पर

स्वामी इन्द्रवेश

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

समय : प्रतिदिन प्रातः 8 से 11 बजे तक, सायं 3 से 6 बजे तक

ब्रह्मा : स्वामी चन्द्रवेश जी आचार्य स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

हरियाणा में सामाजिक सौहार्द बनाने एवं शांति स्थापित करने के लिए यह चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सामाजिक सौहार्द यज्ञ के रूप में आयोजित किया जायेगा।

अध्यक्षता : स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली–2

दिनांक : 2 मार्च, 2016 (बुधवार) से 13 मार्च, 2016 (रविवार) तक

संकल्प : इस महायज्ञ में समाज के प्रतिष्ठित प्रतिनिधि, डॉक्टर, वकील, शिक्षाविद् जन प्रतिनिधि, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक नेता एवं हजारों स्त्री–पुरुष, छात्र एवं छात्राएँ आहुति देकर कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं पाखण्ड के विरुद्ध संकल्प लेंगे।

स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)

मुख्य आकर्षण
चतुर्वेद पारायण महायज्ञ
महिला दिवस पर विशेष कार्यक्रम
स्वामी इन्द्रवेश जयंती समारोह
कार्यकर्ता अभिनन्दन समारोह

विशेष : महायज्ञ में उच्चकोटि के संन्यासी, विद्वानों एवं भजनोपदेशकों द्वारा कार्यक्रम निरन्तर चलता रहेगा। यजमान बनने के इच्छुक महानुभाव अभी से अपनी सूचना देकर कृतार्थ करें। आप सभी महायज्ञ में आहुति डालकर राष्ट्र के नव–निर्माण में अपनी भूमिका निभाएं।

आयोजक

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम), ग्राम–टिटौली, जिला–रोहतक (हरि.)
सम्पर्क : 9416630916, 9354840454, 9466430772, 01262–286900

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।